सामाजिक मर्यादाओं के बन्धन का यादगार पर्व है-रक्षाबन्धन

प्रेम, अहिंसा, विश्वबन्धुत्व, करूणा के सुवासित पुष्पों से पल्लवित तथा सदभावना के आंचल में मानवता को संरक्षित करने वाले भारत देश में मनाये जाने वाले पर्वों में भी मनुष्य की रक्षा का कवच समाया होता है। यही कारण है कि भाग्य विधाता विज्ञान के युग में भी पर्वों की सार्थकता विविध रूपों में स्वीकार्य है। संसार में रह रहे मनुष्यों की सामाजिक मर्यादायें ही समाज की उन्नति और अवनति का कारण बनती है। जिस समाज में मर्यादाओं की सीमा और बन्धन नहीं है वहाँ की सामाजिक व्यवस्था मर्यादित मानवीय संवेदनायें छिन्न-भिन्न हो जाती है। मनुष्य की उपाधि तो होती है परन्तु स्वरूप नहीं झलकता है। आज रक्षा का संकट भारत ही नहीं पूरे विश्व में गहराता जा रहा है। सभी लोग भयभीत है। यह रक्षा चाहे स्व का हो या समाज का दोनों इस परिधि से बाहर नहीं है। वर्तमान समय जो इस तरह की स्थितियां उत्पन्न हुई है उसका कारण यही है कि मनुष्य स्वयं की तथा सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ स्वछन्द बनने की चाह में हिंसक हो चुका है। ऐसे परिवेश में रक्षाबन्धन का पर्व बहुत अहमियत रखता है।

<u>रक्षाबन्धन के पर्व की व्यापक मान्यता और लोकप्रियता:</u> भारत में अनेक पर्व मनाये जाते है, परन्तु रक्षाबन्धन का पर्व पूरे विश्व में व्यापक तथा लोकप्रियता का रूप धारण कर चुका है। भले ही इसका रूप बदला है परन्तु इसकी मान्यता आज भी कम नहीं है। जाति, धर्म, वर्ण और भाषा की परिधि को तोड़कर आज भी सर्वमान्य और लोकप्रिय है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर रक्षा और मर्यादा का बीज सुषुप्तावस्था में होता है, चाहे वह कितना भी क्रूर क्यों न हो। सिर्फ उसे जागृत करने की आवश्यकता होती है।

<u>रक्षाबन्धन की आध्यात्मिक व्याख्या:</u> मनुष्यों द्वारा मनाये जाने वाले प्रत्येक पर्वों के पीछे आध्यात्मिक मर्म समाया होता है जो मनुष्य को किसी न किसी रूप में आध्यात्मिक सम्बल प्रदान करती है। मनुष्य की क्षीण होती आत्मिक शक्तियों को संचित करने तथा उसे पुर्नजागृत करने का अवसर प्रदान करती है। रक्षा का अर्थ सम्भाल करने से है। लेकिन यदि विवेकपूर्ण इसका विश्लेषण किया जाये तो बड़ी बहन की छोटे भाई से रक्षा की कामना कैसे की जा सकती है अथवा छोटा भाई, बड़ी बहन की रक्षा कैसे कर सकता है। वेद,पुराण, धर्म, ग्रन्थ तथा इतिहास के पन्नों में कई ऐसे संस्मरण मिलते है जिसमें केवल भाई-बहन तक ही यह पर्व सीमित नहीं है। प्राचीन काल में तो ब्राह्मण भी रक्षा का सूत्र अपने यजमानों को बांधते थे। उनका तो भाई-बहन का सम्बन्ध ही नहीं था फिर भी ऐसा क्यों किया जाता था।

वास्तव में इस पर्व के पीछे केवल शारीरिक रक्षा का सवाल नहीं है। बल्कि संकल्पों के बन्धन का का भाव समाया होता है। रक्षाबन्धन का दायित्व पूर्ण रूप से सिर्फ ब्राह्मण और भाई-बहन के रूप में ज्यादा प्रचलित है। कालातीत में ब्राह्मणों तथा स्त्रियों को ब्राह्मी स्थिति प्राप्त थी। जो रक्षा का सूत्र बांधते समय दृढ़ संकल्प से उन सभी बुराईयों तथा आसुरी प्रवृत्तियों से रक्षा का करने का व्रत कराती थी जो दु:ख और आसुरीयता की तरफ प्रेरित करती है। यही कारण था कि अतीत में मानुष्य ने अपने श्रेष्ठ कर्मों से मानवीय मर्यादाओं के आधार पर संवेदनाओं को जीवंत रखा था। इस पर्व के लिए यह जरूरी नहीं है कि रक्षा बांधने के लिए भाई-बहन एक ही माँ बाप के हो। यह तो समस्त संसार की आत्माओं के लिए है। रक्षा का अर्थ केवल स्थूल रक्षा से नहीं बल्कि धर्म रक्षा से है और धर्म है आत्मा का। क्योंकि जब स्वामी विवेकानन्द ने 'शिकागो में आत्मिक बहनों एवं भाईयों' कहकर सम्बोधित किया था तब पूरा हॉल तालियों के

गड़गड़ाहट से गूंज उठा था।

आज के परिप्रेक्ष्य में रक्षाबन्धन: बदलते परिवेश तथा भौतिकता के चकाचौंध में मनुष्य की बदलती शैली और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने इस पवित्र पर्व को धूमिल कर दिया है। अब तो केवल औपचारिकता भर निभायी जाने लगी है। रक्षा सूत्रों के बजाए कीमती और डिजाईनदार रक्षाबन्धन तो बने है पर उसमें आध्यात्मिक शक्ति, प्रेम, मर्यादा की शक्ति समाप्त हो गयी है। अब तो केवल परम्परा के नाम पर बहन-भाई के हाथ में बांध देती है और भाई उसे कुछ पैसे और उपहार आदि देकर इतिश्री कर लेता है। अब तो ब्राह्मणों द्वारा यजमानों को बांधे जाने वाले रक्षा सूत्र की भी परम्परा लगभग समाप्त हो गयी है। शायद यही वजह है कि समाप्त होती वास्तविकताओं के कारण हिंसा,अत्याचार तथा पाप का साम्राज्य स्थापित हो गया है। सृष्टि पर बसने वाले प्रत्येक मनुष्य को एक बार इसके बारे में अवश्य विचार करना चाहिए।

समाजिक ताने-बाने से रक्षाबन्धन की मर्यादा लगातार टूटती जा रही है। यदि हम केवल भाई-बहन के रूप में ही रक्षाबन्धन को माने तब भी यह सार्थक साबित नहीं हो रही है। रक्षाबन्धन के दिन हर भाई अपनी बहन से रक्षा बधवांकर पुलकित हो उठता है परन्तु उसके कर्त्तव्यों एवं अर्थों के तह में नहीं जा पाता है। आज भाई-बहन के कलंकित हो रहे सम्बन्ध भी इसका प्रमाण है कि हम ऐसे पर्वों को सही अर्थों में नहीं मनाते हैं। सभी लोगों को इसपर विचार करना चाहिए कि आखिर टूटती पारिवारिक और सामाजिक मर्यादाओं का कारण क्या है? इससे कैसे दूर किया जा सकता है। हम यही सोचते है कि यह तो केवल परम्परा है, परन्तु यह कटु सत्य है कि मनुष्य आध्यात्मिक सही अर्थों में मनाये तो मर्यादाओं को पुनर्स्थापित किया जा सकता है।

रक्षाबन्धन का सही अर्थों में मनाने की आवश्यकता: टूटती पवित्र सामाजिक तथा पारिवारिक मर्यादाओं को मजबूत करने तथा आतंकवाद और अत्याचार जैसी भीषण मानवी विभीषिका को रोकने के लिए रक्षाबन्धन के पर्व को सही अर्थों में मनाने की आवश्यकता है। संसार के रचयिता कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव के हम आत्मायें सब आपस में भाई-बहन है। क्योंकि आत्मिक रूप में हमारा पिता सिर्फ परमात्मा है। इस नाते से हमारा आपस में भाई-भाई और भाई-बहन का रिश्ता है। इसलिए भाषा भेद, जाति, वर्ण, रंग और धर्म से उपर उठकर हर एक को राखी बांधकर उसे दृढ़ संकल्पों से बुराईयों से स्वयं की तथा दूसरों की रक्षा का मजबूत संकल्प करना है। रक्षाबन्धन बांधने के उपलक्ष्य में मिलने वाले पैसे और स्थूल उपहार की बजाए एक दूसरे से गुणों की लेन-देन करे तो अपराध मुक्त और सदभावपूर्ण भारत व एक नये विश्व का निर्माण हो सकेगा। सामाजिक मर्यादायें सुखदायी और स्नेहिल पुष्पों से पल्लवित हो सकती है वशर्तें हम बुराईयों और आसुरी प्रवृत्तियों से रक्षा करने का दृढ़ संकल्प लें। यही परमात्मा का संदेश है। इस पर्व को हम सभी को मिलकर वैश्विक रूप से मनाने की आवश्यकता है जिससे सदभावना और शान्तिपूर्ण संसार का निर्माण हो सकें। यही रक्षाबन्धन का संदेश है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com